Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا

(सूरः बनी ईसराइल : 106)

अनुवाद : उसने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है अतः जब मेरे रब वादा आएगा तो वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-49

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

22 जमादिउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 07 फ़तह 1402 हिज्री शम्सी, 07 दिसम्बर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

हमारे पास तो दुआ ही का हथियार है उसे प्रत्येक अहमदी को पहले से बढ़कर प्रयोग करना चाहिए

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शादी के बाद फ़रमाया तुम मुझे स्वपन में दो मर्तबा दिखाई गई क़बल इसके कि मैं तुमसे शादी करता। मैंने फ़रिश्ते को देखा उसने तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाया हुआ था

उसूली बात यह है कि आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की जब शादी हुई तो आयु के एतबार से किसी भी किस्म की कोई अनोखी बात नहीं थी कि वहां के लोगों के दरमयान कोई सवाल या एतराज़ पैदा होता

"हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नौ साल का होना तो केवल बे सरो-पा अक़्वाल में आया है। किसी हदीस या क़ुरआन से साबित नहीं।"
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे कि मेरी सब बेटियों से ज़ैनब अफ़ज़ल है कि इसको मेरी वजह से तकलीफ़ पहुंची

इस्लाम तो जंगी हालात में भी औरतों, बच्चों और किसी तरह भी जंग में हिस्सा न लेने वालों के क़तल की इजाज़त नहीं देता और इस बात की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी सख़्ती से हिदायत फ़रमाई है

अगर हक़ीक़ी इन्साफ़ क़ायम किया जाता तो ये बातें न होतीं। अगर बड़ी ताक़तें अपने दोहरे मयार न रखतीं या न रखें तो इस किस्म की बदअ-मनी और जंगें दुनिया में हो ही नहीं सकतीं। अतः उन दोहरे मयारों को ख़त्म करो तो जंगें ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएँगी

ऐसे हालात में मुस्लमान मुल्कों को कम से कम होश के नाख़ुन लेने चाहिऐं। अपने इख़तेलाफ़ात मिटा कर अपनी वहदत को क़ायम करना चाहिए

एक होंगे, वहदत होगी तो आवाज़ में भी ताक़त होगी अन्यथा मासूम मुस्लमानों की जानों के ज़ाए होने के ये लोग ज़िम्मेदार होंगे, मुस्लमान हुकूमतें ज़िम्मेदार होंगी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद को हमेशा सामने रखना चाहिए और यह उन ताक़तों का काम है रखें कि ज़ालिम और मज़लूम दोनों की मदद करो

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादी की हिक्मत, शादी के समय हज़रत आयशा रज़ि-यल्लाहु अन्हा की उम्र पर उठाए जाने वाले एतराज़ात का तन्क़ीदी जायज़ा, हज़रत ज़ैनब् रज़ियल्लाहु अन्हा बिंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना से हिजरत के वाक़िया की तफ़सीलात

इसराईल, फ़लस्तीन जंग के युद्ध में दुआ की तहरीक और आलमी मार्गदर्श कों को नसीहत

श्रीमान डाक्टर बशीर अहमद ख़ान साहब आफ़ यू.के की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और श्रीमती वसीमा बेगम साहिबा पत्नी डाक्टर शफ़ीक़ सहगल साहिब (साबिक़ अमीर ज़िला मुल्तान) का जनाज़ा ग़ायब, मरहूमीन का ज़िक्र-ए-ख़ैर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 13 अक्टूबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के बाअज़ वाक़ियात जो बदर के अवसर पर या उसके फ़ौरी बाद के थे उनका वर्णन हो रहा था। वाक़ियात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी का भी वर्णन है। इसलिए यहां यह वर्णन कर देता हूँ। उम्मुल मोमनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद एक दिन हज़रत उसमान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी खोला बिंत हकीम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम शादी नहीं करना चाहते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा किस से? कहती हैं अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चाहें तो कुँवारी से भी कर सकते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरादा विधवा से शादी का हो तो ऐसा भी हो सकता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कुँवारी कौन है? तो बताया गया कि आईशा बिंत अबू बकर। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि विधवा कौन है? अर्ज़ की कि वह सौदा बिंत ज़ोअमा है। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुकी हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इत्तेबा भी इख़तेयार कर चुकी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया: जाओ और इन दोनों के घर वालों से मेरे मुताल्लिक़ बात करो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इजाज़त मिलने पर हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा वहां से निकलीं और पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के घर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के रिश्ते की बात करने के लिए गईं। घर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तो मौजूद नहीं थे जबकि उनकी पत्नी हज़रत उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा मौजूद थीं। हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनसे बात की और मुबारकबाद पेश करते हुए कहने लगीं कि उम्मे रूमान अल्लाह तआला ने आपको कितनी ज़बरदस्त ख़ैरू बरकत से नवाज़ा है। उन्होंने पूछा कि वह ख़ैरू बरकत क्या है? हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आईशा से निकाह का पैग़ाम देकर भेजा है। उम्मे रूमान ने कहा कि फिर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के आने का इंतेतिज़ार करो। कुछ देर इंतेज़ार के बाद हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो घर तशरीफ़ ले आए तो हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा उनसे भी वही कुछ कहती हैं जो उम्मे रूमान से कहा था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्तिफ़सार किया कि खोला यह तो बताओ कि वह ख़ैर-ओ-बरकत है क्या? हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा है। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ आईशा से निकाह का पैग़ाम लेकर आई हूँ। यह सुनके हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि क्या आईशा से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निकाह ठीक है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के भाई की पुत्री है। उनको ख़्याल आया तो हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा वापिस गईं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात अर्ज़ की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वापिस जा के उनसे कहो में इस्लाम में तुम्हारा भाई हूँ और तुम मेरे भाई हो। तुम्हारी पुत्री से मेरा निकाह हो सकता है। शरीयत में तो इस में कोई उज़्र नहीं है। इसलिए हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा वापिस गईं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से यह बात की तो उन्होंने कहा कि प्रतीक्षा करो।

वह बाहर निकल गए। हज़रत उम्मे रूमान रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मुतअम बिन अदी ने अपने बेटे का आईशा के लिए वर्णन किया था। अल्लाह की क़सम अबूबकर ने कभी कोई अह्द नहीं किया जिसकी उन्होंने अह्द शिकनी की हो। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुताम बिन अदी के पास गए और उस के पास उस की पत्नी उम्मुल फ़िता भी थी। इस ख़ातून ने कहा हे इब्ने क़हाफ़ा अगर हम तुम्हारे हाँ अपने बेटे की शादी कर दें तो हो सकता है कि तुम उसे अपने इस दीन में दाख़िल कर लो जिसमें तुम हो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुताम बिन अदी से कहा कि क्या तुम भी इस तरह कहते हो? पति पत्नी दोनों से पूछा। उसने कहा कि जैसा उसने कहा है वही मैं भी कहता हूँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुताम के पास से आए और अल्लाह ने उनके दिल से इस वादा के बारे में सब इन्क़िबाज़ दूर कर दिया। जब उसने यह बात कर दी कि हमारा बेटा अब मुस्लमान तो नहीं हो सकता तो फिर वह रिश्ता ख़त्म हो गया और यह इन्क़िबाज़ दूर हो गया। जिसका वादा किया था कि अगर तुम रिश्ता भेजोगे तो हम करेंगे। वह बात भी ख़त्म हो गई। फिर उन्होंने हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पैग़ाम पहुंचा दो। इसलिए हज़रत ख़ोला रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पैग़ाम पहुंचाया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। यह वाक़िया मस्नद अहमद बिन हम्बल में है।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 8 पृष्ठ 409-410 मस्नद आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा हदीस 26288 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 5 पृष्ठ 442-443)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शादी के बाद फ़रमाया :

तुम मुझे स्वप्न में दो मर्तबा दिखाई गई क़बल इसके कि मैं तुमसे शादी करता। मैंने फ़रिश्ते को देखा उसने तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाया हुआ था।

एक दूसरी रिवायत में है कि उसने कहा कि यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नी हैं। मैंने उस से कहा कि कपड़ा हटाओ। उसने कपड़ा हटाया तो क्या देखा कि वह तुम हो। मैंने ख़्याल किया कि अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो वह उसे पूरा कर देगा। फिर तुम मुझे स्वप्न में दिखाई गई वह तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाए हुए था। मैंने कहा कपड़ा उठाओ तो उसने कपड़ा हटाया। क्या देखा कि वह तुम हो। फिर मैंने यही कहा कि अगर यह अल्लाह की तरफ़ से है तो वह उसे पूरा कर देगा। यह रिवायत बुख़ारी में दर्ज है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हवाले से।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् ताबीर बाब كشف المراة فى المنام, हदीस 7011)

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् ताबीर बाब ثياب الحرير فى المنام, हदीस 7012)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के हालात पर मुश्तमिल किताब अल् इस्तेआब में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की एक रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आप अपनी पत्नी की रुख़्सती क्यों नहीं करा लेते। आईशा से रिश्ता तो हो गया था लेकिन रुख़्सती नहीं हुई थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुद अर्ज़ किया कि रुख़्सती क्यों नहीं करते? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि महर की रक़म की वजह से। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को साढ़े बारह औक़िया दिया। एक औक़िया चालीस दिरहम के बराबर है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह माल अर्थात महर हमारे हाँ दिया।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 167 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

शादी के समय हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र के बारे में भी इतिहासकार और सीरत निगारों और बाद के रावियों के वर्णन की वजह से इख़तेलाफ़ पैदा हो गया है और ग़ैर भी इस से बड़े एतराज़ात उठाते रहते हैं अन्यथा उसूली बात यह है कि आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की जब शादी हुई तो उम्र के एतबार से किसी भी किस्म की कोई अनोखी बात नहीं थी कि वहां के लोगों के दरमयान कोई सवाल या एतराज़ पैदा होता।

शेष पृष्ठ 09 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदाई वह्यी के माध्यम से यह इशारा हो चुका था कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से होनी चाहिए

अगर कोई औरत अपने पति के कुफ़्र की वजह से अलैहदा होती है तो फिर पति के ईमान लाने पर दुबारा निकाह की ज़रूरत नहीं होती

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اُعِیۡذُھَا بِکَ وَذُرِّیَّتَھَا مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ हे अल्लाह उसको और उस की औलाद को शैतान मर्दूद से तेरी पनाह में देता हूँ

اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ فِیۡھِمَا وَبَارِکۡ لَھُمَا فِیۡ شَمۡلِھِمَا। हे अल्लाह इन दोनों में बरकत रख और इन दोनों के जमा होने में बरकत रख दे।
اَللّٰھُمَّ بَارِکۡ فِیۡھِمَا وَبَارِکۡ عَلَیۡھِمَا وَبَارِکۡ لَھُمَا نَسۡلَھُمَا "हे मेरे अल्लाह तू इन दोनों के बाहमी ताल्लुक़ात में बरकत दे और उनके इन ताल्लुक़ात में बरकत दे जो

दूसरे लोगों के साथ क़ायम हों और उनकी नसल में बरकत दे। "यह दुआ है जो शादी करने वाले जोड़ों के लिए उनके माँ बाप को भी करनी चाहिए"

आजकल के शादी के बाद लड़का लड़की में जो मसायल पैदा हो जाते हैं उनमें इज़ाफ़ा भी हो रहा है। इसकी वजह केवल दुनिया की इच्छाओं की लालच है जो बहुत ज़्यादा हो गई है और दीन और ख़ुदा तआला के अहकामात पर तवज्जा कम है। अगर दीन को मुक़द्दम रखा जाए और इस तरह दुआ की जाए और माता पिता भी इस तरह अपना किरदार अदा करें तो रिश्ते क़ायम रह सकते हैं

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अम्वाल की तक़सीम में ऐसे सावधान थे कि बावजूद उसके कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक ख़ादिम की ज़रूरत थी और चक्की पीसने से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथों को तकलीफ़ होती थी परंतु फिर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको ख़ादिम न दिया बल्कि दुआ की तहरीक की और अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जा किया

मुस्लमान देशों को दुनिया को तबाही से बचाने के लिए अपना किरदार अदा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए

हमें दुआओं पर-ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला इस जंग का ख़ातमा करे और मासूम मज़लूम फ़लस्तीनियों की हिफ़ाज़त भी फ़रमाए। मज़ीद उन पर ज़ुलम न हों और ज़ुलम को जहां भी ज़ुलम हैं दुनिया ख़त्म करे

सरिया ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो, ग़ज़व-ए-स्वैक और मुस्लमानों की पहली ईदुल अज़हा से मुताल्लिक़ तारीख़ी वाक़ियात का प्रभावी वर्णन

हम्मास, इसराईल जंग के पेश-ए-नज़र दुआ की तहरीक और मुस्लिम देशों को नसीहत

मुस्लमान देशों को दुनिया में क़ियाम-ए-अमन के लिए एक आवाज़ हो कर अपना भरपूर और प्रभावी किरदार अदा करने की तलकीन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 20 अक्तूबर 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज बदर के फ़ौरी बाद होने वाले कुछ वाक़ियात का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी से वर्णन करूँगा। तारीख़ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दामाद अबुल् आस के क़बूल-ए-इस्लाम की घटना

यूं वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जमादीऊल ऊला छः हिज्री में ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान में एक सरिया ईस स्थान की जानिब रवाना फ़रमाया। ईस मदीने से चार दिनों की मुसाफ़त पर है। दिनों की मुसाफ़त का यह वर्णन जब होता है तो तारीख़ दान ये कहते हैं एक दिन की मुसाफ़त12 मील होती है। इस तरह यह मुक़ाम अड़तालीस मील के फ़ासले पर वाक़्य था। इस सरिया की कुछ तफ़सील यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जमादी उल ऊला छः हिज्री में ज़ैद बिन हारिसा को सत्तर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की कमान में मदीना से रवाना फ़रमाया। इस मुहिम की वजह यह लिखी है कि रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह ख़बर मिली थी कि शाम की तरफ़ से क़ुरैश मक्का का एक क़ाफ़िला आ रहा है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस दस्ते को रवाना फ़रमाया। और वह जो तिजारती सामान का क़ाफ़िला था उनका मक़सद यह था कि इस की आमद से फिर मुस्लमानों पर हमला किया जाए और जंग की जाए। बहरहाल उन्होंने इस को रोक लिया और उनका साज़ो सामान क़बज़े में ले लिया। बाअज़ क़ैदी भी पकड़े। इन क़ैदियों में अबुल् आस भी गिरफ़्तार हुए थे।

(उद्धृत शरह अल्ज़रक़ानी علی المواھب اللدنیۃ भाग पृष्ठ 124-125 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

(उर्दू लुग़त भाग 17 पृष्ठ 772 अंतर्गत शब्द "मरहला")

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को यूं लिखा है कि "इन क़ैदियों में जो सरिया बतरफ़ ईज़ में पकड़े गए अबुल् आस बिन अल् रबीअ भी थे जो आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम के दामाद थे और हज़रत खादीजा रज़ियल्लाहु अन्हा मरहूमा के क़रीबी रिश्तेदारों में से थे। इससे पूर्व वे जंग-ए-बदर में भी क़ैद हो कर आए थे

परंतु उस समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस शर्त पर छोड़ दिया था कि वह मक्का पहुंच कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को मदीना भिजवा दें। अबुल् आस ने इस वादा को तो पूरा कर दिया था परंतु वह ख़ुद अभी तक शिर्क पर क़ायम थे। जब ज़ैद बिन हारिसा उन्हें क़ैद कर के मदीना में लाए तो रात का समय था परंतु किसी तरह अबुल् आ सने हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को इत्तिला भिजवा दी कि मैं इस तरह क़ैद हो कर यहां पहुंच गया हूँ। तुम अगर मेरे लिए कुछ कर सकती हो तो करो। इसलिए ऐन उस समय कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो सुबह की नमाज़ में व्यस्त थे (हज़रत) ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा ने घर के अंदर से बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा कि "हे मुसलमानो मैं ने अबुल् आस को पनाह दी है।" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो सहाबा की तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया।"जो कुछ ज़ैनब ने कहा है वह आप लोगों ने सुन लिया वल्लाह! मुझे उस का इलम नहीं था।' ये बात मेरे इलम में नहीं थी "मगर मोमिनों की जमात एक जान का हुक्म रखती है अगर उन में से कोई किसी काफ़िर को पनाह दे तो उस का एहतिराम लाज़िम है।' फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने (हज़रत) ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया। "जिसे तुमने पनाह दी है उसे हम भी पनाह देते हैं' और जो माल इस मुहिम में अबुल् आस से हासिल हुआ था वह उसे लौटा दिया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाए और अपनी साहबज़ादी ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया "अबुल् आस की अच्छी तरह ख़ातिर तवाज़ो करो। परंतु उस क साथ अकेले में मत मिलो क्योंकि मौजूदा हालत में तुम्हारा उसके साथ मिलना जायज़ नहीं है।' चंद रोज़ मदीना में क़ियाम करके अबुल् आस मक्का की तरफ़ वापस चले गए मगर अब उनका मक्का में जाना वहां ठहरने की ग़रज़ से नहीं था क्योंकि उन्होंने बहुत जल्द अपने लेन-देन से फ़राग़त हासिल की और कलमा-ए--शहादत पढ़ते हुए मदीना की तरफ़ रवाना हो गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंच कर मुस्लमान हो गए। जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को उनकी तरफ़ बग़ैर किसी जदीद निकाह के लोटा दिया .. बाअज़ रिवायात में यह भी आता है कि उस समय हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा और अबुल् आस का दुबारा निकाह पढ़ा गया था मगर पहली रिवायत ज़्यादा मज़बूत और सही है।"(ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 670-671) कि निकाह की ज़रूरत नहीं थी। इस से यह फ़त्वा भी मिल गया कि :

अगर कोई औरत अपने पति के कुफ़्र की वजह से अलैहदा होती है तो फिर पति के ईमान लाने पर दुबारा निकाह की ज़रूरत नहीं होती।

हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा अपने पति के इस्लाम क़बूल करने के बाद ज़्यादा देर तक ज़िंदा न रहीं। आठ हिज्री में उनका इंतेक़ाल हो गया। हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा , हज़रत उम सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन्हें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिदायात के मुताबिक़ ग़ुसल दिया।

(सीरत सहाबा भाग 6 पृष्ठ 90 दारुल ईशात कराची 2004 ई.)

हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब उन्हें हुक्म दिया कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पुत्री को ग़ुसल दें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था उसके दाहने पहलू से और वुज़ू के आज़ा से शुरू करना। एक दूसरी रिवायत में इस की तफ़सील यूं मिलती है कि हज़रत उम्मे अतिया रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पुत्री ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा फ़ौत हुईं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें फ़रमाया उसको ताक़ अर्थात तीन या पाँच दफ़ा ग़ुसल देना और पांचवें दफ़ा काफ़ूर डालना या फ़रमाया कुछ काफ़ूर डालना। जब तुम उनको ग़ुसल दे चुको तो मुझे इत्तिला करना। वह कहती हैं कि हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें अपना इज़ार अता फ़रमाया और फ़रमाया उसे उसका शआर बना देना। (सही मुस्लिम किताब अल्जनायज़ बाब फ़ी ग़ुसल हदीस : 2176-2173) कपड़ा जो कमर पर बाँधते हैं वह दिया। शआर वह कपड़ा है जो बदन के साथ लगा हुआ हो।

(लुगात अल् हदीस भाग 2 पृष्ठ 486 नुमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई.)

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। ख़ुद क़ब्र में उतरे और अपनी साहबज़ादी को सपुर्द-ए-ख़ाक किया। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा ने औलाद में दो बच्चे छोड़े। अली और अमामा। एक रिवायत के मुताबिक़ अली ने बचपन में ही वफ़ात पाई जबकि दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सन् रुश्द को पहुंचे। इब्ने असाकिर ने लिखा है कि यरमूक के मार्के में उन्होंने शहादत पाई। फ़तह मक्का में यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे थे।

(सेरूल सहाबा भाग 6 पृष्ठ 90 दारुल ईशात कराची 2004 ई.)

हज़रत अमामह रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में आता है कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके साथ निकाह कर लिया था।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 8 पृष्ठ 25 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत अबुल् आस रज़ियल्लाहु अन्हो का तिजारती कारोबार मक्का में था इसलिए वे मदीना में क़ियाम नहीं कर सकते थे। इसलिए क़बूल-ए-इस्लाम के बाद वो आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इजाज़त लेकर फिर मक्का लौट आए। मक्का के क़ियाम की वजह से उन्हें ग़ज़वात में शिरकत का मौक़ा नहीं मिल सका।केवल एक सरिया में जो दस हिज्री में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की सरकर्दगी में भेजा गया था उस में शरीक हुए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने यमन से वापसी में उन्हें यमन का आमिल बनाया था। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतेक़ाल के बाद अबुल् आस भी ज़्यादा अरसा ज़िंदा न रहे और बारह हिज्री में उन्होंने वफ़ात पाई।

(सेरुल सहाबा भाग 7 पृष्ठ 491 दारुल ईशात कराची)

(ओसोदुल् ग़ाबा भाग 6 पृष्ठ 182-183 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबुल् आस के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ुशनुदी का वर्णन करते हुए इस तरह लिखा है : "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दामाद अबुल् आस बिन राबीअ हज़रत खादीजा रज़ियल्लाहु अन्हा मरहूमा के क़रीबी रिश्तेदार अर्थात हक़ीक़ी भांजे थे और बावजूद मुशरिक होने के उनका सुलूक अपनी पत्नी से बहुत अच्छा था और मुस्लमान होने के बाद भी पति पत्नी के ताल्लुक़ात बहुत ख़ुशगवार रहे। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस जिहत से अबुल् आस की बहुत तारीफ़ फ़रमाया करते थे कि उसने मेरी लड़की के साथ बहुत अच्छा सुलूक किया है। अबुल् आस हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द में 12 हिजरी में फ़ौत हुए परंतु उनकी पत्नी मुहतरमा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में ही फ़ौत हो गईं।' इस रिवायत से तो यह लगता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में पहले जो रिवायत है कि उन्होंने आमिल बनाया वह थोड़ी संदिग्ध है। "उनकी लड़की अमामा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बहुत अज़ीज़ थी हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के निकाह में आएं मगर औलाद से महरूम रहीं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ : 674)

ग़ज़व-ए-स्वैक दो हिज्री ज़ुल् हज्जा में हुआ। ग़ज़व-ए-स्वैक का कारण यह है कि जब मुशरेकीन शिकस्त ख़ूर्दा और ग़मनाक,मक्का की तरफ़ वापस आए तो अबूसुफ़ियान ने ख़ुद पर तेल लगाना हराम कर दिया। उस ने नज़र मानी कि वे ग़ुसल नहीं करेगा यहां तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से बदर का इंतेक़ाम ले-ले। एक रिवायत के मुताबिक़ अबूसुफ़ियान दो सौ सवारों के साथ जबकि दूसरी रिवायत के मुताबिक़ चालीस सवारों को लेकर अपनी कसम को पूरा करने के लिए निकला और मदीने की तरफ़ जाने वाला आम और मामूल का रास्ता तर्क करते हुए नजद के रास्ते रवाना हुआ। जब वह वादी कनात् के सिरे पर पहुंचा तो उसने यतीब नामी पहाड़ के क़रीब पड़ाव डाला जो मदीने से क़रीबन बारह मील के फ़ासले पर वाक़्य था। कनात् मदीना और अहद के दरमयान मदीना की तीन मशहूर वादियों में से एक वादी है। वह रात के समय निकला और रात की तारीकी में ही क़बीला बनू नज़ीर की तरफ़ गया और हुयय्यिबिन अख़्तब के पास पहुंच कर उसका दरवाज़ा खटखटाया। उसने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया। फिर अबूसुफ़ियान वहां से सलअम बिन मिश्कम के पास गया जो उस समय बनू नज़ीर का सरदार और उनका ख़ज़ानची था। अबूसु-फ़ियान ने उस से इजाज़त मांगी। उसने इजाज़त दे दी और उस की ख़ातिर तवाज़ो की, खिलाया पिलाया और लोगों की राज़ की बातें बताईं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के राज़ बताए अर्थात कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जो भी रोज़ाना का मामूल था उसके बारे में बताया कि क्या करते हैं, किस समय कहाँ

होते हैं। फिर अबूसुफ़ियान रात के आख़िरी हिस्से में वहां से रवाना हुआ और अपने साथियों से जा मिला। फिर उसने क़ुरैश के चंद लोगों को मदीने के नवाह में उर्या नामी जगह की तरफ़ भेजा। उर्या भी मदीना से तीन मील के फ़ासले पर एक नख़लिस्तान है। उन्होंने वहां ख़जूरों के दरख़्तों के कई झुण्ड जला दिए और एक अंसारी शख़्स और इसके हलीफ़ को क़तल कर दिया। एक रिवायत में इस अंसारी का नाम हज़रत माबद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन हुआ है। फिर जब अबूसुफ़ियान ने समझा कि उस की क़सम पूरी हो चुकी है, नुक़्सान जो उसने पहुंचा दिया तो कुछ न कुछ बदला ले लिया। इंतेक़ाम की आग कुछ ठंडी हुई तो वह अपना लश्कर लेकर मक्का की तरफ़ रवाना हो गया। यह भी कहा जाता है कि अबू सुफ़ियान ने यह काम उस समय सरअंजाम दिया जिस रात वह सलाम बिन मिश्कम से मिलकर वापिस आया था।

बहरहाल जब लोगों को इस बात का इलम हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना में हज़रत अबू लुबाबा बशीर बिन अब्दुल मंज़र रज़िय-ल्लाहु अन्हो को अपना नायब निर्धारित फ़रमाया और हिज्रत के बाईस्वीं माह, पाँच जुल् हज्जा को इतवार के दिन मुहाजेरीन और अंसार में से दो सौ सहाबा को साथ लेकर उनके तआक़ुब में निकले यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो करकर्तुल कदर पहुंच गए। करकर्तुल कदर , मअदन के निकट में अरीजा के क़रीब एक जगह है। इसके और मदीना के दरमयान छयानवे मील की मुसाफ़त है। यह भी कहा जाता है कि यह बनू सुलेम का चशमा है।

बहरहाल अबू सुफ़ियान और उस का लश्कर छुपते छुपाते भागते जा रहे थे और सत्तू के थैले फेंकते जा रहे थे और यही उनका आम ज़ाद-ए-राह था। मुस्लमान उन्हें उठाते जा रहे थे। इसलिए इस ग़ज़वा का नाम ग़ज़वा अल्सूक अर्थात सत्तूओं वाला ग़ज़वा पड़ गया। अरबी में सत्तू को स्वैक कहते हैं।

अबू सुफ़ियान और उस का लश्कर भाग गया। मुस्लमान उन्हें पकड़ न सके। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना की तरफ़ वापस तशरीफ़ ले आए। जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ वापस आ रहे थे तो उन्होंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह! क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पसंद करते हैं कि यह हमारे लिए ग़ज़वा हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 174 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(अल् तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 2 पृष्ठ 22-23 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(सीरतुन नबी अज़ अल्लामा शिबली नामानी भाग अव्वल पृष्ठ : 211)

(इन्साईकलोपीडीया भाग 6 पृष्ठ 65-66)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 242-239-234 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

यह ग़ज़वा ही है चाहे जंग हुई है या नहीं हुई।

इस की तफ़सील सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में यूं वर्णन हुई है कि "बदर के बाद अबूसुफ़ियान ने क़सम खाई थी कि जब तक मक़्तूलीन बदर का इंतेक़ाम न ले-लेगा कभी अपनी पत्नी के पास नहीं जाएगा और न कभी अपने बालों को तेल लगाएगा। इसलिए बद रुके दो तीन माह बाद ज़ुल् हज्ज के महीना में अबूसुफ़ियान दो सौ मुसल्लह क़ुरैश की जमईयत को अपने साथ लेकर मक्का से निकला और नज्दी रास्ता की तरफ़ से होता हुआ मदीना के पास पहुंच गया। यहां पहुंच क्रास ने अपने लश्कर को तो मदीना से कुछ फ़ासिला पर छोड़ा और ख़ुद रात की तारीकी के पर्दा में छुपता हुआ यहूदी क़बीला बन नज़ीर के रईस हुबेब्न अख़तब के मकान पर पहुंचा और उस से इमदाद चाही परंतु चूँकि उसके दिल में अपने अहदोपैमाँ की कुछ याद बाक़ी थी उसने इंकार किया।' उसने कहा हमारा अह्द है मैं नहीं बता सकता तुम्हें, न पनाह दे सकता हूँ। "फिर अबू सुफ़ियान इसी तरह छुपता हुआ बनू नज़ीर के दूसरे रईस सलाम बिन मुश्कम के मकान पर गया और उस से मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इआनत का तलबगार हुआ। इस बद-बख़्त ने कमाल जुर्रत के साथ सारे अहदोपैमाँ को बालाए ताक़ पर रख कर अबूसुफ़ियान की बड़ी आओ-भगत की और उसे अपने पास रात को मेहमान रखा और उस से मुस्ल-मानों के हालात के मुताल्लिक़ मुख़्बरी की। सुबह होने से क़बल अबूसुफ़ियान वहां से निकला और अपने लश्कर में पहुंच कर उसने क़ुरैश के एक दस्ते को मदीना के क़रीब अरीज़ की वादी में छापा मारने के लिए रवाना कर दिया। यह वह वादी थी जहां उन अय्याम में मुस्लमानों के जानवर चरा करते थे और जो मदीना से केवल तीन मील पर थी और ग़ालिबन उस का हाल अबूसुफ़ियान को सलाम बिन मुश्कम से मालूम हुआ होगा। जब क़ुरैश का यह दस्ता वादी अरीज़ में पहुंचा तो ख़ुश क़िस्मती से उस समय मुस्लमानों के जानवर वहां मौजूद नहीं थे, अलबत्ता एक मुस्लमान अंसारी और उसका एक साथी उस समय वहां मौजूद थे। क़ुरैश ने इन दोनों को पकड़ कर ज़ालिमाना तौर पर क़तल कर दिया। और फिर ख़जूरों के दरख़्तों को आग लगाकर और वहां के मकानों और झोंपड़ियों को जला कर अबूसुफ़ियान की क़ियामगाह की तरफ़ वापस लौट गए। अबूसुफ़ियान ने इस कामयाबी को अपनी किस्म के पूरा होने के लिए काफ़ी समझ कर लश्कर को वापसी का हुक्म दिया। दूसरी तरफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अबूसुफ़ियान के हमला की इत्तिला हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा की एक जमाअत साथ लेकर उसके तआक़ुब में निकले परंतु चूँकि अबूसुफ़ियान अपनी किस्म के अफ़ा को मशकूक नहीं करना चाहता था। वह ऐसी सरासीमगी के साथ भागा कि मुस्लमान उसके लश्कर को पहुंच नहीं सके और अंततः चंद दिन की गैरहाज़िरी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मदीना वापिस आए।" उन्होंने भी यही लिखा है कि "इस ग़ज़वा को ग़ज़व-ए-स्वैक कहते हैं जिसकी वजह यह है कि जब अबूसुफ़ियान मक्का को वापस लौटा तो तआक़ुब के ख़्याल की वजह से कुछ तो घबराहट में और कुछ अपना बोझ हल्का करने के लिए वह अपना सामान-ए-रसद जो ज़्यादा तर स्वैक अर्थात सत्तू के थैलों पर मुश्तमिल था रास्ता में फेंकता गया था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 453-454)

ग़ज़ व-ए-स्वैक के मुताल्लिक़ आता है कि इस नाम का ग़ज़वा चार हिज्री में ग़ज़ व-ए-अहद के बाद भी था। इसलिए तिबरी ने दो स्वैक नामी ग़ज़वात का वर्णन किया है।

एक ग़ज़व-ए-बदर से पहले जिसकी तफ़सीलात अभी वर्णन हुई हैं। यह ग़ालिबन ग़ज़ व-ए-अहद होगा जिसकी तफ़सीलात वर्णन हुई हैं और दूसरा ग़ज़व-ए-अहद के बाद लेकिन बाक़ी सीरत की किताबों में जैसे सीरत इब्ने हशाम, सबलुल् हुदा इत्यादि ने इस ग़ज़वा को ग़ज़व-ए-बदरुल मोइद नाम से वर्णन किया है। इस ग़ज़वा की भी तफ़सील थोड़ी सी वर्णन कर देता हूँ। खुलासतन यूं है कि अबूसुफ़ियान ने अहद के दिन वापस जाने का इरादा किया तो आवाज़ लगाई और रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम को मुख़ातब करते हुए कहा कि हमारे और तुम्हारे दरमयान एक वर्ष बाद बदरुल सफ़रा का वाअदा है हम वहां लड़ेंगे। अरब के जमा होने की जगह और यह बदरुद सफ़रान का बाज़ार था। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इरशाद फ़रमाया कि कहो ठीक है। इन शा अल्लाह। तो लोग इस वादे पर मुंतशिर हो गए। इसलिए अहद के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अबूसुफ़ियान से होने वाले वाअदा के मुताबिक़ अगले वर्ष आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बदर को रवाना हुए। वहां पहुंच कर अबूसुफ़ियान के इंतेज़ार में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आठ रातें क़ियाम फ़रमाया। अबूसुफ़ियान अहले मक्का के में मजन्ना आकर ठहरा। मजन्ना भी मक्का से चंद मील पर मरल् ज़ोहरान में जबलुल सोफ़रा के क़रीब एक शहर है। इस के बाद ख़ुशकसाली का बहाना बना कर अपने साथियों को लेकर वापिस चला गया। उसे आगे आने की जुर्रत नहीं हुई। अहले मक्का इस फ़ौज को जैशुल स्वीक कहने लगे क्योंकि यह सत्तू पीते हुए गए थे।

(उद्धृत तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 87 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

(सिबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 337 मतबूआ दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 259 प्रकाशन ज़व्वार एकेडेमी कराची)

पहली ईदुल अज़हा के बारे में लिखा है कि दो हिज्री में ग़ज़व-ए-स्वैक से वापसी के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईदुल अज़हा अदा फ़रमाई। यह मुस्लमानों की पहली ईदुल अज़हा थी। ज़ुल हज्जा की दस तारीख़ को आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने अस्हाब के हमराह मदीना से बाहर तशरीफ़ ले गए। बाजमाअत नमाज़ अदा फ़रमाई और वहीं अपने दस्त-ए-मुबारक से क़ुर्बानी की।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 6 पृष्ठ 362-363 प्रकाशन दारुल मरूफ़ लाहौर 2022 ई.)

एक रिवायत में है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ग़ज़व-ए-बनू क़ेनुक़ाअ से वापस मदीना तशरीफ़ लाए तो ईदुल अज़हा आ गई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने और आपके सहाबा में से जिसको क़ुर्बानी मयस्सर थी दसवीं ज़ुल हज्जा को क़ुर्बानी की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा के साथ ईद-गाह तशरीफ़ ले गए। वहां आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईदुल अज़हा की पहली

नमाज़ पढ़ाई। ईदुल अज़हा की यह पहली नमाज़ है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीने में सहाबा को पढ़ाई और वहीं ईदगाह में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ से दो बकरियां या एक बकरी की।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि ग़ज़व-ए-बनू क़ेनुक़ाअ से वापिस आकर हम ने ज़ुल् हज्जा की दसवीं तारीख़ में क़ुर्बानी की। यह पहली क़ुर्बानी थी जो मुस्लमानों के सामने हुई। हमने बनू सलमा में क़ुर्बानी की थी। मैंने क़ुर्बानियों का शुमार किया। उस रोज़ इस मुक़ाम पर सतरह क़ुर्बानियां शुमार की गईं।

(तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 49 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) यह हवाला तारीख़ तिबरी में से है।

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसके ज़िमन में यूं लिखा है कि "इसी वर्ष माह ज़ील् हज्जा में दूसरी इस्लामी ईद अर्थात ईदुल अज़हा शुरू हुई जो माह ज़ुल् हजा की दसवीं तारीख़ को समस्त इस्लामी दुनिया में मनाई जाती है। इस ईद में इलावा नमाज़ के जो प्रत्येक सच्चे मुस्लमान की हक़ीक़ी ईद है हरज़ी इस्तिताअत मुस्लमान के लिए वाजिब होता है कि अपनी तरफ़ से कोई चौपाया जानवर क़ुर्बान करके उसका गोश्त अपने अज़ीज़-ओ-क़ारिब और दोस्तों और हमसाइयों और दूसरे लोगों में तक़सीम करे और ख़ुद भी खाए।' हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रा तफ़सील इसलिए लिख देते हैं ताकि बुनियादी मसायल का भी बीच में पता लगता रहे। तो यह है उस गोश्त की तक़सीम जो क़ुर्बानी का है। "इसलिए ईदुल अज़हा के दिन और इसके बाद दो दिन तक समस्त इस्लामी दुनिया में लाखों करोड़ों जानवर फ़ी सबीलिल्लाह क़ुर्बान किए जाते हैं और इस तरह मुस्लमानों के अंदर अमली तौर पर इस अज़ीमुश्शान क़ुर्बानी की याद ज़िंदा रखी जाती है जो हज़रत इब्राहीम और हज़रत इसमाईल और हज़रत हाजरह ने पेश की और जिसकी बेहतरीन मिसाल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी थी और प्रत्येक मुस्लमान को होशयार किया जाता है कि वह भी अपने आक़ा और मालिक की राह में अपनी जान और माल और अपनी प्रत्येक चीज़ क़ुर्बान कर देने के वास्ते तैयार रहे। यह ईद भी ईदुल-फ़ित्र की तरह एक अज़ीमुश्शान इस्लामी इबादत की तकमील पर मनाई जाती है और वह इबादत हज है।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहि-बज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 454-455)

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह भी दो हिज्री में हुआ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से अक़द की दरख़ास्त की जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बख़ुशी क़बूल फ़रमाया। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की दरख़ास्त की लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे और उन्हें कोई जवाब नहीं दिया लेकिन यह है कि पहले हज़रत उमर रज़िय-ल्लाहु अन्हो और अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा था। फिर बाद में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा था जो आगे रिवायात खुलती हैं। बहरहाल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी मुझसे करेंगे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या तुम्हारे पास महर के लिए कुछ है? मैंने अर्ज़ किया कि मेरा घोड़ा और मेरी ज़िरह है। आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया घोड़ा तो तुम्हारे लिए ज़रूरी है अल्बत्ता ज़िरह को बेच दो। इसलिए मैंने अपनी ज़िरह को चार-सौ अस्सी दिरहम में बेच कर हक़ महर की रक़म का इंतेज़ाम किया। एक रिवायत में यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़िरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हा को बेची और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हा ने ज़िरह की क़ीमत भी अदा कर दी और ज़िरह भी वापस कर दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा कहते हैं कि मैं वह रक़म लेकर आया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गोद में रख दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस में से मुट्ठी भर बिलाल को देते हुए फ़रमाया इस से कुछ ख़ुशबू ख़रीद लाओ और कुछ लोगों को इरशाद फ़रमाया कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जहेज़ तैयार करो। इसलिए हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए एक चारपाई, चमड़े का एक तकिया जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी ये सब तैयार किया गया। तो यह है हक़ महर का इस्तिमाल। इस तरह भी हो सकता है। बाअज़ लोग कहते हैं शादी हो गई तो हम हक़ महर नहीं देंगे लेकिन वहां यह मिसाल नज़र आती है कि हक़ महर से ही ख़र्च हुआ।

एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से यह रिश्ता करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। मेरे रब ने मुझे ऐसा करने का हुक्म फ़रमाया है।

रुख़्सती के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया जब फ़ातिमा तुम्हारे पास आएं तो जब तक मैं न आऊँ कोई बात न करना। इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा कहते हैं कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत उम्मे एमन रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ आएं और घर के एक हिस्से में बैठ गईं। मैं भी एक तरफ़ बैठ गया। फिर रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया क्या मेरा भाई यहां है? उम्मे एमन ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का भाई? और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी पुत्री की शादी उस से की है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हाँ क्योंकि ऐसे रिश्ते में शादी हो सकती है वह बहरहाल सगा भाई नहीं है और इस तरह कज़न के साथ हो सकती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अन्दर तशरीफ़ लाए और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा मेरे पास पानी लाओ। वह उठीं और घर में रखे हुए एक प्याले में पानी लाईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसे लिया और फिर मुँह में कुछ देर रख कर दुबारा प्याले में डाल दिया। फिर हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि आगे बढ़ो। वह आगे हुईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन पर और उनके सिर पर कुछ पानी छिड़का और दुआ देते हुए कहा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِیْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ हे अल्लाह इस को और इस की औलाद को शैतान मर्दूद से तेरी पनाह में देता हूँ।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। दूसरी तरफ़ रुख करो। जब उन्होंने दूसरी तरफ़ रुख किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके कंधों के दरमयान पानी छिड़का। फिर ऐसा ही हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ किया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया अपने अहल के पास जाओ और अल्लाह का नाम और बरकत साथ।

इसी तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से एक रिवायत मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक बर्तन में वुज़ू किया फिर उस पानी को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा पर छिड़का और फ़रमाया

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِمَا وَبَارِكْ لَهُمَا فِيْ شَمْلِهِمَا۔ हे अल्लाह इन दोनों में बरकत रख और इन दोनों के जमा होने में बरकत रख दे।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें इरशाद फ़रमाया कि हम फ़ातिमा को तैयार करें यहां तक कि हम इस को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ले जाएं इसलिए हम घर की तरफ़ मुतवज्जा हुए। हमने उसको बतहा के नवाह की नरम मिट्टी से लीपा। पहले घर ठीक किया। फिर खजूर के रेशों से दो तकिए भरे। हमने उसको अपने हाथों से धुना। फिर हमने खजूर और मनका खाने के लिए और मीठा पानी पीने के लिए रखा और एक लकड़ी ली और उस को कमरे में एक तरफ़ लगा दियाता कि उस पर कपड़े इत्यादि लटकाए जा सकें और इस पर मशकीज़ा लटकाया जाए।

हमने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी से अच्छी शादी कोई नहीं देखी।

दावत-ए-वलीमा खजूर, जो, पनीर और हीस पर मुश्तमिल था।

हीस उस खाने को कहते हैं जो खजूर और घी और पनीर इत्यादि से मिला कर बनाया जाता है। हज़रत अस्मा बिंत उमेस रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती

हैं कि इस ज़माने में इस दावत-ए-वलीमा से बेहतर कोई वलीमा नहीं हुआ।

(शरह अलाम जरकानी अलल मवाहेबुल दुनिया भाग 2 पृष्ठ 357 से 366 ज़िक्र तज़वीज अला बेफ़ातेम दारुल कुतुब इल्मिया 1996 ई.)

(तारीख़ अल् ख़मीस भाग 2 पृष्ठ 77 فی الوقائع من اول هجرته ﷺ الی وفاته दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2009 ई.)

(सुंन इब्ने माजा किताब अल् निकाह बाब अल योम हदीस नंबर : 1911)

(तबक़ातुल कुबरा भाग 8 पृष्ठ 19 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

(लुगात अल् हदीस भाग 1 पृष्ठ 542 नामानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई.)

यह वह शादी और दावत-ए-वलीमा है जो सादगी की मिसाल है। हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की शादी का तफ़सीली वर्णन करते हुए सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में लिखा है। यह भी वर्णन कर देता हूँ। बाअज़ बातें इस में ज़ाइद भी हैं इसलिए वर्णन ज़रूरी है। लिखा है कि "हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस औलाद में सबसे छोटी थीं जो हज़रत खादीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से पैदा हुई। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी औलाद में सबसे ज़्यादा हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अज़ीज़ रखते थे। और अपनी ज़ाती ख़ूबियों की वजह से वही इस इमतेयाज़ी मुहब्बत की सबसे ज़्यादा अहल थीं।' इन में खूबियां भी बहुत थीं। "अब उनकी उम्र कमोबेश पंद्रह वर्ष की थी और शादी के पैग़ामात आने शुरू हो गए थे। सबसे पहले हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरख़ास्त की, मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उज़्र कर दिया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया परंतु उनकी दरख़ास्त भी मंज़ूर नहीं हुई। इस के बाद इन दोनों बुज़ुर्गों ने यह समझ कर कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरादा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के मुताल्लिक़ मालूम होता है हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से तहरीक की कि तुम फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुताल्लिक़ दरख़ास्त कर दो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो ग़ालिबन पहले से ख़ाहिशमंद थे परंतु बाव्जाह लज्जा ख़ामोश थे फ़ौरन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दरख़ास्त पेश कर दी। दूसरी तरफ़ आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदाई वह्यी के ज़रीया यह इशारा हो चुका था कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से होनी चाहिए।

इसलिए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरख़ास्त पेश की तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तो उसके मुताल्लिक़ पहले से ख़ुदाई इशारा हो चुका है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा वह बाव्जाह हया के ख़ामोश रहीं।' बोली नहीं लेकिन शरमाई। तो लिखते हैं कि "यह एक तरह से इज़हार-ए-रज़ा था। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुहाजेरीन और अंसार की एक जमाअत को जमा कर के हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह पढ़ दिया। ये सन 2 हिज्री की इब्तिदा या वस्त का वाक़िया है। इस के बाद जब जंग-ए-बदर हो चुकी तो ग़ालिबन माह ज़ौ अलहजा सन 2 हिज्री में रुख़स्ताना की तजवीज़ हुई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाकर दरयाफ़त फ़रमाया कि तुम्हारे पास महर की अदायगी के लिए कुछ है या नहीं? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम! मेरे पास तो कुछ नहीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह ज़िरह क्या हुई जो मैं ने इस दिन (यानी बदर के मुग़ानिम में से) तुम्हें दी थी?' जो ग़नीमत का माल मिला था उस में से ज़िरह मैंने तुम्हें दी थी वह कहाँ गई? "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या वह तो है। आप सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। बस वही ले आओ। इसलिए यह ज़िरह चार-सौ अस्सी दिरहम में फ़रोख़्त कर दी गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसी रक़म में से शादी के अख़राजात मुहय्या किए। जो जहेज़ आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़ातिमा को दिया वह एक बैलदार चादर। एक चमड़े का गदेला जिसके अंदर खजूर के ख़ुशक पत्ते भरे हुए थे और एक मशकीज़ा था। और एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के जहेज़ में एक चक्की भी दी थी। जब ये सामान हो चुका तो मकान की फ़िक्र हुई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो अब तक ग़ालिबन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद के किसी हिज्रा इत्यादि में रहते थे परंतु शादी के बाद ये ज़रूरी था कि कोई अलग मकान हो जिस मैं ख़ावंद पत्नी रह सकें, इसलिए आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से इरशाद फ़रमाया कि अब तुम कोई मकान तलाश करो जिसमें तुम दोनों रह सको। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने आरिज़ी तौर पर एक मकान का इंतेज़ाम किया और इस में हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की विदाई हो गई। इसी दिन रुख़स्ताना के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए और थोड़ा सा पानी मंगा कर उस पर दुआ की और फिर वो पानी हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो हर दो प्रिय को अल् फ़ाज़ फ़रमाते हुए छिड़का : "पहले भी मैं दुआ बता चुका हूँ कि

"اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِمَا وَبَارِكْ عَلَيْهِمَا وَبَارِكْ لَهُمَا نَسْلَهُمَا" यह दुआ है जो शादी करने वाले जोड़ों के लिए उनके माँ बाप को भी करनी चाहिए।

आजकल शादी के बाद लड़का लड़की में जो मसायल पैदा हो जाते हैं उनमें इज़ाफ़ा भी हो रहा है। इसकी वजह केवल दुनिया की हुआ-ओ-हवस है जो बहुत ज़्यादा हो गई है और दीन और ख़ुदा तआला के अहकामात पर तवज्जा कम है। अगर दीन को मुक़द्दम रखा जाए और इस तरह दुआ की जाए और इस तरह माता पिता भी अपना किरदार अदा करें तो रिश्ते क़ायम रह सकते हैं।

बहरहाल इस दुआ का मतलब यह है कि "अर्थात हे मेरे अल्लाह तू इन दोनों के बाहमी ताल्लुक़ात में बरकत दे और उन के इन ताल्लुक़ात में बरकत दे जो दूसरे लोगों के साथ क़ायम हों और उनकी नसल में बरकत दे।' और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस नए जोड़े को अकेला छोड़ कर वापस तशरीफ़ ले आए। इसके बाद जो एक दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हारिस बिन नुमान अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हो के पास चंद एक मकानात हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे फरमावें कि वे अपना कोई मकान ख़ाली दें।" हमारे लिए हम वहां चले जाएं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब आ जाएं। "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह हमारी ख़ातिर इतने मकानात पहले ही ख़ाली कर चुके हैं कि अब मुझे तो उन्हें कहते हुए शर्म आती है। हारिसा को किसी तरह उस का इलम हुआ तो वे भागे आए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा जो कुछ है वह हुज़ूर का है और वल्लाह जो चीज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझ से क़बूल फ़र्मा लेते हैं वे मुझे ज़्यादा ख़ुशी पहुंचाती है बनिसबत उस चीज़ के जो मेरे पास रहती है।

और फिर उस मुख़लिस सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बाइसरार अपना एक मकान ख़ाली करवा के पेश कर दिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा वहां उठ गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत साहि-बज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 455-456)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी तंगदस्ती और ग़ुर्बत के बावजूद ज़ोहद-ओ-क़नाअत का नमूना दिखाया करते थे। इसलिए अहादीस में वर्णन है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने चक्की चलाने से अपने हाथ में तकलीफ़ की शिकायत की और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ क़ैदी आए तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ गईं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं पाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलीं और उनको बताया कि किस तरह मैं आई थी। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो हज़रत

आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा के अपने हाँ आने का बताया। हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फिर हमारे घर तशरीफ़ ले आए जबकि हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे। हम खड़े होने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अपनी जगहों पर ठहरे रहो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे दरमयान बैठ गए यहां तक कि मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों की ठंडक अपने सीने पर महसूस की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क्या मैं तुम दोनों को इस से बेहतर बात न बताऊं जो तुमने मांगा है। वह यह है कि जब तुम दोनों अपने बिस्तरों पर लेटो तो चौंतीस 34 मर्तबा अल्लाहु-अकबर कहो, तेंतीस 33 दफ़ा सुब्हान-अल्लाह कहो और तेंतीस 33 दफ़ा अलहमदु लिल्लाह कहो। यह तुम दोनों के लिए ख़ादिम से ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ख़ादिम मांगने के लिए हाज़िर हुईं और काम की शिकायत की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : तुम इस ख़ादिम को हमारे पास नहीं पाओगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्या मैं तुझे ऐसी बात न बताऊं जो तेरे लिए ख़ादिम से बेहतर है। तुम अपने बिस्तर पर जाते हुए तेंतीस 33 दफ़ा सुब्हान-अल्लाह कहो, तेंतीस 33 मर्तबा अलहमदु लिल्लाह कहो और चौंतीस 34 दफ़ा अल्लाहु-अकबर कहो। यह मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताब الذكر والدعاوالتوبة...باب التسبيح اوّل النهار وعند النوم। हदीस नंबर : 6915- 6918)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि, इस वाक़िया को बुख़ारी के हवाले से आपने वर्णन फ़रमाया है। फ़रमाया कि "हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाह अन्हा ने शिकायत की कि चक्की पीसने से उन्हें तकलीफ़ होती है। इसी अरसा में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास कुछ ग़ुलाम आए। अतः आप रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ ले गईं लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को घर पर न पाया। इस लिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपनी आमद की वजह से इत्तिला देकर घर लौट आएं। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम घर तशरीफ़ लाए तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जनाब-ए-को हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा की आमद की इत्तिला दी जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए और हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आते देखकर चाहा कि उठूँ मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अपनी अपनी जगह पर लेटे रहो। फिर हम दोनों के दरमयान आकर बैठ गए यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों की ख़ुनकी मेरे सेना पर महसूस होने लगी। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बैठ गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें कोई ऐसी बात न बता दूं जो इस चीज़ से जिसका तुमने सवाल किया है बेहतर है और वह यह कि जब तुम अपने बिस्तरों पर लेट जाओ तो चौंतीस 34 दफ़ा तकबीर कहो और तेंतीस 33 दफ़ा सुब्हानल्लाह कहो और तेंतीस ३३ दफ़ा अलहमदु लिल्लाह कहो। अतः यह तुम्हारे लिए ख़ादिम से अच्छा होगा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "इस वाक़िया से मालूम होता है कि :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अम्वाल की तक़सीम में ऐसे मुहतात थे कि बावजूद इस के कि हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को एक ख़ादिम की ज़रूरत थी और चक्की पीसने से आप रज़ियल्लाहु अन्हुके हाथों को तकलीफ़ होती थी परंतु फिर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनको ख़ादिम न दिया बल्कि दुआ की तहरीक की और अल्लाह तआला की तरफ़ ही ध्यान दिलवाया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अगर चाहते तो हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को ख़ादिम दे सकते थे क्योंकि जो अम्वाल तक़सीम के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आते थे वह भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में तक़सीम करने के लिए आते थे और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का भी उनमें हक़ हो सकता था और हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी इस की हक़दार थीं लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एहतियात से काम लिया और न चाहा कि इन अम्वाल में से अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों कूदे दें क्योंकि मुम्किन था कि इस से आइन्दा लोग कुछ का कुछ नतीजा निकालते और बादशाह अपने लिए अम्वाल अल् नास को जायज़ लेते" लेकिन बदक़िस्मती से आजकल के बादशाह, मुस्लमान बादशाह तो फिर भी जायज़ ही समझते हैं। "अतः एहतियात के तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को इन ग़ुलामों और लौंडियों में से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास उस समय बग़रज़ तक़सीम आएं कोई ना दी।

इस जगह यह भी याद रखना चाहिए कि जिन अम्वाल में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का और आपके रिश्तेदारों का ख़ुदा तआला ने हिस्सा निर्धरित फ़रमाया है उनसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़र्च फ़र्मा लेते थे और अपने मुताल्लिक़ीन को भी देते थे। हाँ जब तक कोई चीज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हिस्सा में न आए उसे क़तअन ख़र्च न फ़रमाते और अपने अज़ीज़ से अज़ीज़ रिश्तेदारों को भी देते।

क्या दुनिया किसी बादशाह की मिसाल पेश कर सकती है जो बैतुल माल का ऐसा मुहाफ़िज़ हो। अगर कोई नज़ीर मिल सकती है तो केवल उसी पाक व्यक्तित्व के ख़ुद्दाम में से अन्यथा दूसरे मज़ाहिब उस की नज़ीर नहीं पेश कर सकते।

(सीरत नबय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अनवारुल उलूम भाग 1 पृष्ठ 544-545)

बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा। समय में दुबारा दुनिया के हालात के हवाले से दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ।

अब तो मग़रिबी दुनिया बल्कि अमरीका के भी कुछ लिखने वालों ने अख़बारों में यह लिखा है कि बदले की भी कोई इंतेहा होनी चाहिए और अमरीका और मग़रिबी देशों को हम्मास और इसराईल की जंग में अपना किरदार अदा करना चाहिए और सुलह और जंग बंदी की कोशिश करनी चाहिए लेकिन लिखने वाले यह भी लिखते हैं कि लगता है ये लोग जंग बंद करवाने की बजाय भड़काने पर तुले हुए हैं। इसी तरह अमरीका की कल ख़बर थी कि वज़ारत-ए-ख़ारजा के एक बड़े अफ़्सर ने इस बात पर अस्तीफ़ा दे दिया कि अब इंतेहा हो चुकी है। फ़लस्तीनी मासूमों पर बहुत ज़्यादा ज़ुलम हो रहा है और बड़ी ताक़तों को इस का ख़्याल रखना चाहिए। तो उन लोगों में भी शुरफ़ा मौजूद हैं। इसी तरह बाअज़ दफ़ा मीडीया पर आता है बाअज़ यहूदी रुबाई (Rabbis) भी उनके हक़ में बोल रहे हैं और ज़ुलम के ख़िलाफ़ बोल रहे हैं।

रूस के वज़ीर-ए-ख़ारजा ने भी वर्णन दिया है कि अगर इसी तरह ये देश अपना रव्यया रखे रहे तो ये जंग पूरे खित्ते में फैल जाएगी बल्कि मैं समझता हूँ कि दुनिया में फैल जाएगी। अतः उन लोगों को होश के नाख़ुन लेने चाहिऐं। इसी तरह मुस्लमान देशों को जैसा कि मैंने पहले भी कहा था एक हो कर और एक आवाज़ हो कर बोलना चाहिए। अगर दुनिया के 53, 54 देशों कहे जाते हैं कि मुस्लमान हैं वे एक आवाज़ में बोलीं तो ये बड़ी ताक़त होगी और इस का असर भी होगा।

अन्यथा फिर इक्का दुक्का आवाज़ें कोई असर नहीं रखतीं और यही एक तरीक़ा है दुनिया में अमन क़ायम करने का और इस जंग के का। पस मुस्लमान देशों को दुनिया को तबाही से बचाने के लिए अपना किरदार अदा करने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए।

अल्लाह तआला उनको उसकी तौफ़ीक़ भी दे। लेकिन हमें बहरहाल दुआओं पर-ज़ोर देना चाहिए। अल्लाह तआला इस जंग का ख़ातमा करे और मासूम मज़लूम फ़लस्ती नियों की हिफ़ाज़त भी फ़रमाए। इन पर मज़ीद ज़ुलम न हों और ज़ुलम को जहां भी ज़ुलम हैं, दुनिया से ख़त्म करे। अल्लाह तआला हमें दुआओं की तौफीक दे।

★ ★ ★

पृष्ठ 02 का शेष

अगर हैरत-अंगेज़ तौर पर कोई ग़ैरमामूली बात होती तो मुनाफ़ेक़ीन या मुख़ाले-फ़ीन ज़रूर एतराज़ात की भरमार कर देते लेकिन किसी भी किताब में कोई ऐसा एतराज़ वर्णित नहीं है। जिन कुतुब में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र ग़ैरमामूली छोटी कर के वर्णन हुई है इस के बारे में हुक्म-ओ-अदल हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन को बेसरोपा अक़्वाल क़रार देते हैं। फ़रमाते हैं कि : "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नौ साला होना तो केवल बे-सर-ओ-पा अक़्वाल में आया है। किसी हदीस या क़ुरआन से साबित नहीं।"

(आर्या धर्म, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 64)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा रज़िय-ल्लाहु अन्हा की रुख़्सती की तफ़सीलात वर्णन करते हुए लिखा है कि "हज़रत खादीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ शादी फ़रमाई थी। यह सन् नबवी का दसवाँ वर्ष और शवाल का महीना था। और उस समय हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र' जब रिश्ता किया था "सात वर्ष की थी। परंतु मालूम होता है कि उनका नश-ओ-नुमा उस समय भी ग़ैरमामूली तौर पर अच्छी थी, अन्यथा कोई वजह नहीं थी कि खोला बिंत हकीम को जो उन के निकाह की मुहर्रिक बनी थीं आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शादी के लिए उनकी तरफ़ ख़्याल जाता लेकिन बहरहाल अभी तक वह बालिग़ नहीं हुई थीं, इसलिए उस समय निकाह तो हो गया मगर रुख़स्ताना नहीं हुआ और वह बदस्तूर अपने माता पिता के पास मुक़ीम रहीं, लेकिन अब हिज्रत के दूसरे वर्ष जब कि उनकी शादी पर पाँच वर्ष गुज़र चुके थे' निकाह पर "और उनकी उम्र बारह वर्ष की थी वह बालिग़ हो चुकी थीं, इसलिए ख़ुद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर रुख़स्ताना की तहरीक की। जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महर की अदायगी का इंतेज़ाम किया .. और माह शवाल 2 हिजरी में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने माता पिता के घर से रुख़स्त हो कर हरम-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में दाख़िल हो गईं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 423)

यह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की तहक़ीक़ है लेकिन कुछ इतिहासकार के नज़दीक इस से ज़्यादा उम्र भी वर्णन की जाती है। शादी के समय "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा मदीना के मुज़ाफ़ात में मुक़ीम थीं। इसलिए अंसार की औरतों ने वहां जमा हो कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को रुख़स्ताना के लिए आरास्ता किया और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद वहां तशरीफ़ ले गए और इस के बाद हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर से रुख़स्त हो कर हरम-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में दाख़िल हो गईं।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 429-430)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विशे-षताओं का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि "बावजूद .. सिगर सनी के' छोटी उम्र होने के "हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़हन और हाफ़िज़ा ग़ज़ब का था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीम-ओ-तर्बीयत के अधीन उन्होंने निहायत तेज़ी के साथ हैरत-अंगेज़ तौर पर तरक़्क़ी की। और दरअसल इस छोटी उम्र में उनको अपने घर में ले आने से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़रज़ ही यह थी कि ता आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बचपन से ही अपने मंशा के मुताबिक़ उनकी तर्बीयत कर सकें और ता उन्हें आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत में रहने का लंबे से लंबा अरसा मिल सके और वह इस नाज़ुक और अज़ीमुश्शान काम के अहल बनाए जा सकें जो एक शारा नबी की पत्नी पर आयद होता है। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस मंशा में सफल हुए और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुस्लमान महिलाओं की इस्लाह और तालीम--ओ-तर्बीयत का वह काम सरअंजाम दिया जिसकी नज़ीर तारीख-ए-आलम में नहीं मिलती। अहादीस-ए-नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक बहुत बड़ा और बहुत ज़रूरी हिस्सा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ही की रिवायात पर आधारित है यहाँ तक कि उनकी रिवायतों की कुल संख्या दो हज़ार दो सौ दस तक पहुँचती है। उनके इलम-ओ-फ़ज़ल और धर्म को समझने और गोर करने का यह आलम था कि बड़े बड़े महान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो उनका लोहा मानते और उनसे फ़ैज़ हासिल करते थे। यहाँ तक कि हदीस में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई इलमी मुश्किल ऐसी पेश नहीं आई कि इस का हल हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास न मिल गया हो और उर्वा बिन ज़ुबैर का कथन है कि मैंने कोई शख़्स इलम क़ुरआन और इलम मीरास और इलम हलाल-ओ-हराम और इलम फ़िक़्ह और इलम-ए-शेर और इलम-ए-तिब और इलम-ए-हदीस-ए-अरब और इलम अंसाब में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा आलिम नहीं देखा। ज़ोहद-ओ-क़नाअत में उनका यह मर्तबा था कि एक दफ़ा उनके पास कहीं से एक लाख दिरहम आए उन्होंने शाम होने से पहले पहले सब ख़ैरात कर दिए। हालाँकि घर में शाम के खाने तक के लिए कुछ नहीं था। इन्ही औसाफ़-ए--हमीदा की वजह से जिनकी झलक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में ही नज़र आने लग गई थी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन्हें खासतौर पर अज़ीज़ थे .. एक दफ़ा फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने "कि मर्दों में तो बहुत लोग कामिल गुज़रे हैं लेकिन औरतों में कामिलात बहुत कम हुई हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आसीया पत्नी फ़िरऔन और मर्यम बिंत इमरान का नाम लिया और फिर फ़रमाया कि आईशा को औरतों पर वह दर्जा हासिल है जो अरब के बेहतरीन खाने सरीद को दूसरे खानों पर होता है। एक दफ़ा बाअज़ दूसरी पत्नियाँ किसी घरेलू कार्य में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुताल्लिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कोई बात कही मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे, लेकिन जब इसरार के साथ कहा गया तो आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "मैं तुम्हारी इन शिकायतों का क्या करूँ। मैं तो यह जानता हूँ कि कभी किसी पत्नी के लिहाफ़ में मुझ पर मेरे ख़ुदा की वही नाज़िल नहीं हुई परंतु आयशा के लिहाफ़ में वह हमेशा नाज़िल होती है। अल्लाह अल्लाह क्या ही मुक़द्दस वह पत्नी थी जिसे यह विशेषता प्राप्त हुई और क्या ही मुक़द्दस वह पति था जिसकी अहली मुहब्बत का मयार भी तक़द्दुस-ओ-तहारत के सिवा कुछ नहीं था! ... अहादीस में यह वर्णन भी आता है कि आख़िरी दिनों में हज़रत सौदा बिंत ज़मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी बारी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दे दी थी और इस तरह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सोहबत से मुस्तफ़ीज़ होने का दोहरा अवसर मयस्सर था .. चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तालीम-ओ-तर्बीयत का ख़ास ख़्याल था और वे अपनी उम्र और हालात के लिहाज़ से इस काबिल थीं कि उन पर ख़ास तवज्जा दी जाए इस लिए आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम ने बारी के मुताल्लिक़ सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा की तजवीज़ मंज़ूर फ़र्र माली। परंतु उस के बाद भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास बाक़ायदा तशरीफ़ ले जाया करते थे और दूसरी बीवियों की तरह उनकी दिलदारी और आराम का ख़्याल रखते थे।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के अनपढ़ होने के मुताल्लिक़ इख़तेलाफ़ है।' पढ़े लिखे होने के बारे में "मगर बुख़ारी की एक रिवायत से पता लगता है कि उनके पास एक नुस्ख़ा क़ुरआन शरीफ़ का लिखा हुआ मौजूद था। जिस पर से उन्होंने एक इराक़ी मुस्लमान को कुछ आयात ख़ुद इमला कराई थीं जिस से यह साबित होता है कि वे कम से कम लिखना नहीं जानती थीं और अग़लब है कि उन्होंने अपने रुख़स्ता-ना के बाद ही लिखना सीखा था लेकिन जैसा कि कुछ इतिहासकार ने तसरीह की है वह ग़ालिबन लिखना नहीं जानती थीं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद कम-ओ-बेश अड़तालीस वर्ष ज़िंदा रहें और 58 हिजरी के माह-ए-रमज़ान में अपने महबूब हक़ीक़ी से जा मिलीं। उस समय उनकी उम्र क़रीबन अड़सठ वर्ष थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ा-दा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 430 से 432)

फिर एक वाक़िया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में बदर के फ़ौरी बाद हुआ वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पुत्री हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का है।

जो मक्के में थीं और फिर वह मदीना तशरीफ़ लाएंग। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दामाद अबुल् आस बिन रबी भी ग़ज़व-ए-बदर में मुस्लमानों के हाथ क़ैद हुए। उनकी हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा मक्के में थीं। उन्होंने वह हार अपने शौहर के फ़िद्या में भेजा जो उनकी वालिदा हज़रत खादीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनकी शादी के अवसर पर पुत्री को पहनाया था।

यह फ़िद्या लेकर आने वाला अबू उल्लास का भाई अम्र बिन रबी था। आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह हार देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत ज़्यादा दिल-गीर और आबदीदा हो गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया। अगर तुम मुनासिब समझो तो ज़ैनब के क़ैदी को रिहा कर दो और उस का यह हार भी वापस कर दो। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया ज़रूर या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! इसलिए अबूल् आस को रिहा कर दिया गया। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा का हार भी लौटा दिया गया परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबूल् आस को इस शर्त पर रहा किया कि मक्का जाते ही वह हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को इजाज़त देंगे कि वह मदीना को हिज्रत कर सकूँ।

(उद्धृत अल् सीरतुल हल् बिया भाग 2 पृष्ठ 264-265 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इब्ने इसहाक़ का वर्णन है कि रिहाई के बाद अबूल् आस जब मक्का पहुंचा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो और एक अंसारी को भेजा कि तुम बतन-ए-हज्ज में ठहरो। (बतन-ए-हज्ज यह मक्के से आठ मेल के फ़ासले पर एक मुक़ाम है)। यहां तक कि ज़ैनब तुम्हारे पास से गुज़रे तो तुम उसके साथ हो जाओ और उसे मेरे पास ले आओ। इसलिए वे फ़ौरन रवाना हो गए। यजश वाक़िया ग़ज़व-ए-बदर के क़रीबन एक माह बाद ज़ाहिर हुआ।

अबूल् आस ने मक्के पहुंच कर हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाने की इजाज़त दे दी तो वे ज़ाद-ए-राह तैयार करने लगीं। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैं ज़ाद-ए-सफ़र की तैयारी में व्यस्त थी कि हिंद बिंत उत्बा ने मुझे कहा हे बिंत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुझे मालूम हुआ है कि तू अपने वालिद के पास जाना चाहती है तो मैंने उसे तरह देते हुए टाल दिया। यह सुनकर उसने कहा हे बिंत अम् ऐसा वतीरा इख़्तेयार न कर। अगर तुम्हें सामान की ज़रूरत है जो सफ़र में तुम्हारे काम आए या माल की ज़रूरत है जिसके ज़रीया से तू अपने बाप के पास पहुंच जाए तो मेरे पास तेरी ज़रूरत का सारा सामान मौजूद है मुझसे इन्क़िबाज़ न रखो। महिलाओं के दिलों में वे रंज--ओ-मलाल नहीं होता जो मर्दों के दिलों में होता है। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मेरा ख़्याल है कि उसने यह बात ख़ुलूस से कही थी परंतु मैं इस से भयभीत थी इसलिए मैंने उसे तरह दे दी। बहाना कर दिया। इब्ने इसहाक़ ने वर्णन किया है कि हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा ने सफ़र की तैयारी की और जब वह अपने सफ़र की तैयारी से फ़ारिग़ हो गईं तो अबुल आस के भाई किनाना बिन रबी ने सवारी पेश की। आप रज़ियल्लाहु अन्हु सवार हो गईं और किनाना ने अपनी कमान और तरकश साथ ले लिया और उनको दिन की रोशनी में इस हाल में लेकर चल पड़ा कि हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा अपने हौदज में थीं। क़ुरैश में यह बात जब मौज़ू बेहस बनी तो वह उनकी तलाश में चल पड़े और चलते चलते ज़ी तूआ में उनको पालिया। ज़ी तूआ भी मक्का की एक मशहूर वादी है और मस्जिद हराम से आधे मील के फ़ासले पर है। बहरहाल सबसे पहले उनकी तरफ़ हब्बार बिन अस्वद फ़हरिया और उसने नेज़े से सवारी को डरा दिया और हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि हामिला थीं उनका हमल ज़ाए हो गया और उनका देवर तीर निकाल कर बैठ गया और ऐलान कर दिया जो मेरे क़रीब आएगा उन तीरों का निशाना बनेगा। एक रिवायत में यह भी आता है कि हब्बार ने सवारी को नेज़ा चुभोया तो इस से हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा एक पत्थर पर गिर गईं जबकि वह हामिला थीं। इस तरह उनका जनीन साक़ित हो गया। बहरहाल यह वाक़ियात देख के लोग उनके पास से लौट आए। फिर अबूसुफ़ियान और क़ुरैश के सरदार आए और उस को कहा जवान! तीर मत चला यहाँ तक कि हम तुमसे बातचीत कर लें। इसलिए वे तीर-अंदाज़ी से रुक गए और अबूसुफ़ियान ने कहा तुमने ठीक नहीं किया। खुले आम ख़ातून को लेकर चला है हालाँकि तू हमारी जान की मुसीबत और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कारनामे को ख़ूब जानता है। जब तू मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की पुत्री को अलानिया और खुले आम ले जाएगा तो लोग समझेंगे यह हमारी ज़िल्लत और रुस्वाई का मूजिब है और हमारी कमज़ोरी और कमज़ोरी का बायस है। कहने लगा कि मुझे ज़िंदगी की क़सम! हमें उस को रोकने की क़तअन कोई ज़रूरत नहीं और इसके ख़िलाफ़ कोई जोश और जज़बा भी नहीं लेकिन अच्छी सूरत यह है कि तुम उसको वापस ले चलो। जब हालात बेहतर और पुरसुकून हो जाएं और लोग समझें कि हमने उसको वापिस लौटा लिया है तो उस को चुपके से उस के बाप के पास ले जाओ। फिर किनाना ने इस मंसूबे पर अमल किया। बाक़ौल इब्ने इसहाक़ हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा दो-चार रोज़ मक्के में मुक़ीम रहें यहां तक कि जब चेमगोइयां ख़त्म हो गईं तो रात को चुपके से हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके साथी के सपुर्द कर दिया। वह हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाँ रात की तारीकी में आए।

इमाम बीहक़ी ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा के मक्का से आने का वाक़िया वर्णन करके कहा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी अँगूठी देकर मक्का रवाना किया कि ज़ैनब को अपने हमराह ले आए। इसलिए उसने अपनी हिक्मत-ओ-दानाई से यह अँगूठी एक चरवाहे को दी और उसने हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा को पहुंचा दी। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा यह अँगूठी देखकर पहचान गईं तो उस से पूछा : तुझे यह किस ने दी है? उसने बताया मक्के से बाहर एक आदमी ने मुझे दी है। इसलिए हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा रात को मक्के से बाहर आएं और इस के पीछे सवार हो गईं और वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना ले आए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे कि मेरी सब बेटियों से ज़ैनब अफ़ज़ल है कि उस को मेरी वजह से तकलीफ़ पहुंची।

(अल् सीरतुल नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेइब्ने कसीर भाग 2 पृष्ठ 516 से 518 दारुल मारूफ़ बेरूत 1976 ई.)

(अल् सीरतुल नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लेइब्ने हशशाम पृष्ठ 445 हाशिया प्रकाशन आदारुल कुतुब इल्मिया बेरूत2001 ई.)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 59-180 प्रकाशन ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में यह तफ़सील इस तरह लिखी है कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नक़द फ़िद्या के क़ायम मक़ाम अबुल् आस के साथ यह शर्त मुक़र्रर की कि वे मक्का में जाकर ज़ैनब को मदीना भिजवा दें और इस तरह एक मोमिन रूह दार-ए-कुफ़्र से नजात पा गई। कुछ अरसा बाद अबुल् आस भी मुस्लमान हो कर मदीना में हिज्रत कर आए और इस तरह पति पत्नी फिर इकट्ठे हो गए। हज़रत ज़ेनब् रज़ियल्लाहु अन्हा की हिज्रत के मुताल्लिक़ यह रिवायत आती है कि जब वह मदीना आने के लिए मक्का से निकलें तो मक्का के चंद क़ुरैश ने उनको बज़ोर वापस ले जाना चाहा। जब उन्होंने इंकार किया तो एक बद-बख़्त हब्बार बिन अस्वद नामी ने निहायत वहशियाना तरीक़ पर उन पर नेज़े से हमला किया जिसके डर और सदमा के नतीजा में उन्हें इस्क़ात हो गया। बल्कि इस अवसर पर उनको कुछ ऐसा सदमा पहुंच गया कि इसके बाद उनकी सेहत कभी भी पूरे तौर पर बहाल नहीं हुई और अंततः उन्होंने इसी कमज़ोरी और ज़ोफ़ की हालत में बेवक़त देहांत किया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए पृष्ठ 368-369)

इस समय इस को इतना ही वर्णन करूँगा।

आजकल के दुनिया के हालात जो हैं उनके बारे में इस समय में एक दुआ के लिए भी कहना चाहता हूँ।

पिछले चंद दिनों से हम्मास और इसराईल की जंग चल रही है जिसकी वजह से अब दोनों तरफ़ के शहरी औरतें, बच्चे, बूढ़े बिना मतभेद के मारे जा रहे हैं या मारे गए हैं।

इस्लाम तो जंगी हालात में भी औरतों बच्चों और किसी तरह भी जंग में हिस्सा न लेने वालों के क़तल की इजाज़त नहीं देता और इस बात की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बड़ी सख़्ती से हिदायत भी फ़रमाई है।

(सुंन अबी दाऊद किताबुल् जिहाद बाब फ़ी दुआ अल् मुशरेक़ीन हदीस : 2614)

दुनिया यह कह रही है और हक़ायक़ भी कुछ ऐसे हैं कि इस जंग में पहल हम्मास ने की और इसराईली शहरियों के बिला इमतेयाज़ क़तल के मुर्तक़िब हुए।

क़त-ए-नज़र इस के कि इसराईली फ़ौज पहले इस तरह कितने मासूमों को फ़लस्तीनियों को क़तल करते रहे हैं मुस्लमानों को बहरहाल इस्लामी तालीम के मुताबिक़ अमल करना चाहिए।

इसराईली फ़ौजों ने जो किया, वह उनका फ़ेअल है और इसके हल करने के और तरीक़े थे।

अगर कोई जायज़ लड़ाई है तो फ़ौज से तो हो सकती है, औरतों बच्चों और बेज़रर लोगों से नहीं। बहरहाल इस लिहाज़ से हम्मास ने जो ग़लत क़दम उठाया वह ग़लत था। इस का नुक़्सान ज़्यादा हुआ फ़ायदा कम।

यह जो भी था उस की सज़ा या इस से जंग हम्मास तक ही महिदूद रहनी चाहिए थी। असल जुर्रत और बहादुरी तो यह है कि यह रद्द अमल होता।

लेकिन अब जो इसराईल की हुकूमत कर रही है वह भी बहुत ख़तरनाक है और यह मामला अब लगता है कि रुकेगा नहीं। कितनी बे-हिसाब जानें मासूम लोगों और औरतों और बच्चों की ज़ाए होंगी उसका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। इसराईली हुकूमत का तो यह ऐलान था कि हम ग़ज़ा को बिल्कुल मिटा देंगे और इस के लिए बेशुमार, बे-तहाशा बमबार मिनट (bombardment)उन्होंने की। शहर राख का ढेर ही कर दिया। अब नई सूरत यह पैदा हुई है कि वे कहते हैं कि एक मिलियन से ज़्यादा लोग ग़ज़ा से निकल जाएं। कुछ इस में से निकलने भी शुरू हो गए हैं। इस पर शुक्र है कि मरी मरी आवाज़ से ही सही लेकिन कुछ आवाज़ तो यू ईन (UN) वालों की तरफ़ से निकली है कि यह इन्सानी हुक़ूक़ की पामाली है और यह ग़लत हो गा और इस से बहुत मुश्किलात पैदा होंगी और इसराईल को अपने इस हुक्म पर सोचना चाहिए। बजाय इसके कि सख़्ती से इस को कहें कि यह ग़लत है। अभी भी दरख़ास्त ही कर रहे हैं।

बहरहाल इन मासूमों का कोई क़सूर नहीं जो जंग नहीं कर रहे।

अगर दुनिया इसराईली औरतों बच्चों और आम शहरी को मासूम समझती है तो ये फ़लस्तीनी भी मासूम हैं।

इन अहल-ए-किताब की तो अपनी तालीम भी यह कहती है कि इस तरह क़तल--ओ-ग़ारत जायज़ नहीं है। मुस्लमानों पर अगर इल्ज़ाम है कि उन्होंने ग़लत किया तो ये लोग अपने गिरेबान में भी झांकें। बहरहाल हमें बहुत दुआ की ज़रूरत है।

फ़िलस्तीन के सफ़ीर ने यहां टी.वी में ग़ालिबन बी-बी सी को इंटरव्यू दिया और सवाल करने वाले के जवाब में कहा कि हम्मास एक militant ग्रुप है, हुकूमत नहीं है और फ़िलस्तीन की हुकूमत का इस से कोई ताल्लुक़ नहीं है लेकिन साथ ही यह सवाल भी उठाया और उनकी यह बात दरुस्त है कि :

अगर हक़ीक़ी इन्साफ़ क़ायम किया जाता तो ये बातें नहीं होतीं। अगर बड़ी ताक़तें अपने दोहरे मयार न रखतीं या न रखें तो इस किस्म की बदअमनी और जंगें दुनिया में हो ही नहीं सकतीं। अतः उन दोहरे मयारों को ख़त्म करो तो जंगें ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाएँगी। यही बातें मैं इस्लाम की तालीम की रोशनी में एक अर्से से कह रहा हूँ लेकिन सामने तो ये कहते हैं ठीक है ठीक है लेकिन अमल करने को तैयार नहीं हैं।

अब समस्त बड़ी ताक़तें या मग़रिबी ताक़तें इन्साफ़ को एक तरफ़ कर के फ़लस्तीनियों पर सख़्ती के लिए इकट्ठी हो रही हैं और प्रत्येक तरफ़ से फ़ौजों के भिजवाने की बातें हो रही हैं और मज़लूमों की तस्वीरें दिखाई जाती हैं कि इस तरह ज़ुलम हो रहा है। ग़लत-सलत रिपोर्टें मीडीया में दिखाई जाती हैं और आ जाती हैं, एक दिन यह ख़बर आती है कि इसराईली औरतों और बच्चों का यह परिणाम हो रहा है, उनकी यह बुरी हालत हो रही है। अगले दिन पता चलता है कि वो इसराईली नहीं थे वे तो फ़लस्तीनी थे लेकिन इस की मीडीया में कोई माज़रत नहीं होती और कोई हमदर्दी का लफ़्ज़ उनके लिए नहीं जाता।

ये लोग जिसकी लाठी उस की भैंस पर अमल करते हैं। जिनके हाथ में दुनिया की मईशत है उनके आगे ही उन्होंने झुकना है।

अगर जायज़ा लिया जाए तो लगता है कि बड़ी ताक़तें जंग भड़काने पर तुली हुई हैं बजाय उस को ठंडा करने के। ये लोग जंग ख़त्म करना नहीं चाहते।

पहली जंग-ए-अज़ीम के बाद जंगों के ख़ातमे के लिए बड़ी ताक़तों ने लीग आफ़ नेशनज़ बनाई लेकिन इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे न करने और अपनी बरतरी क़ायम रखने की वजह से यह नाकाम हो गई और दूसरी जंग-ए-अज़ीम हुई और कहते हैं सात करोड़ से ज़्यादा जानें ज़ाए हुईं।

अब यही हाल यू एन (UN) का हो रहा है। बनाई तो इसलिए गई थी कि दुनिया में इन्साफ़ क़ायम किया जाएगा और मज़लूम का साथ दिया जाएगा। जंगों के ख़ातमे की कोशिश की जाएगी लेकिन इन बातों का दौर दूर तक पता नहीं।

अपने मुफ़ादात को ही प्रत्येक देख रहा है।

अब जो इस बे इंसाफ़ी की वजह से जंग होगी उस के नुक़्सान का तसव्वुर ही आम आदमी नहीं कर सकता और ये सब बड़ी ताक़तों को पता है कि कितना शदीद नुकसान होगा।

लेकिन फिर भी इन्साफ़ क़ायम करने पर कोई तवज्जा नहीं है और तवज्जा देने पर कोई तैयार भी नहीं है।

ऐसे हालात में मुस्लमान मुल्कों को कम से कम होश के नाख़ुन लेने चाहिए। अपने इख़तेलाफ़ात मिटा कर अपनी वहदत को क़ायम करना चाहिए।

अगर मुस्लमानों को यह हिदायत अल्लाह तआला ने अहल-ए-किताब से ताल्लुक़ात बेहतर करने के लिए दी है कि تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ (आल--ए-इमरान : 65) इस कलिमे की तरफ़ आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे मध्य सामान्य है यह अल्लाह तआला की ज़ात है तो मुस्लमान जिनका कलिम मुकम्मल तौर पर एक है क्यों इख़तेलाफ़ात ख़त्म करके इकट्ठे नहीं हो सकते? अतः सोचें और अपनी वहदत को क़ायम करें और यही दुनिया से फ़साद दूर करने का ज़रीया हो सकता है। और फिर एक हो कर इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे करने के लिए प्रत्येक जगह मज़लूम के हुक़ूक़ क़ायम करने के लिए भरपूर आवाज़ उठाएं।

एक होंगे, वहदत होगी तो आवाज़ में भी ताक़त होगी अन्यथा मासूम मुस्लमानों की जानों के ज़ाए होने के ये लोग ज़िम्मेदार होंगे, मुस्लमान हुकूमतें ज़िम्मेदार होंगी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस इरशाद को हमेशा सामने रखना चाहिए और यह उन ताक़तों का काम है रखें कि ज़ालिम और मज़लूम दोनों की मदद करो।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् मज़ालिम बाब اَعِنْ اَخَاكَ ظَالِمًا اَوْ مَظْلُوْمًا हदीस : 2443)

अतः इस अहम बात को समझें अल्लाह तआला मुस्लमान हुकूमतों को भी अक़ल और समझ दे और वे एक हो कर इन्साफ़ क़ायम करने वाले बनें और दुनिया की ताक़तों को भी अक़ल और समझ दे कि दुनिया को तबाही में डालने की बजाय दुनिया को तबाही से बचाने की कोशिश करें और अपनी अनाओं की तसकीन को अपना मक़सद न बनाएँ।

हमेशा उन्हें याद रखना चाहिए कि जब तबाही होगी तो ये ताक़तें भी महफ़ूज़ नहीं रहेंगी। बहरहाल हमारे पास तो दुआ ही का हथियार है उसे प्रत्येक अहमदी को पहले से बढ़कर इस्तिमाल करना चाहिए।

ग़ज़ा में बाअज़ अहमदी घराने भी घिरे हुए हैं अल्लाह तआला उन्हें भी महफ़ूज़ रखे और सब मासूमों मज़लूमों को वे जहां भी हैं महफ़ूज़ रखे। अल्लाह तआला हम्मास को भी अक़ल दे और ये लोग ख़ुद अपने लोगों पर ज़ुलम करने के ज़िम्मेदार न बनें और न किसी पर ज़ुलम करें। इस्लामी तालीम के मुताबिक़ जो हुक्म है उस के मुताबिक़ अगर जंगें करनी भी हैं तो इस तरह करें किसी क़ौम की दुश्मनी भी हमें इन्साफ़ से दूर करने वाली न हो यही अल्लाह तआला का हुक्म है।

अल्लाह तआला बड़ी ताक़तों को भी ये तौफ़ीक़ दे कि वे दोनों तरफ़ इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे करते हुए अमन क़ायम करने वाली बनें। यह नहीं कि एक तरफ़ झुकाओ हो जाए और दूसरी तरफ़ का हक़ मारा जाए। ज़ुलम-ओ-ज़्यादती में बढ़ने वाली न हों। अल्लाह तआला करे कि हम दुनिया में अमन-ओ-सलामती देखने वाले हों।

नमाज़ के बाद में दो जनाज़े भी पढ़ाऊंगा।

जनाज़ा हाज़िर है। जनाज़ा हाज़िर जो है वह डाक्टर बशीर अहमद ख़ान साहब का है। यहां यू.के में ही हलक़ा मस्जिद फ़ज़ल में रहते थे। पिछले दिनों बानवे वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा हज़रत मीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के नवासे और हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु साबिक़ अमीर जमाअत सूबा सरहद के दामाद और मुहम्मद ख़वास ख़ान साहब आफ़ पिशावर के बेटे थे। मरहूम नमाज़ रोज़ा के पाबंद, ख़िलाफ़त से गहरा अक़ीदत का ताल्लुक़ रखने वाले, ग़रीबपर्वर, नेक और मुख़लिस बुज़ुर्ग थे। नुसरत जहां स्कीम के तहत वक़्फ़ कर के यह अहमदिया हस्पताल टीचेमान (Techiman) घाना में भी गए। वहां उन्होंने कुछ अरसा ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। घाना से वापिस आने के बाद उनको इस्लामाबाद के देही इलाक़ों में अहमदी डाक्टरों के साथ मिलकर मैडीकल कैंप लगाने की तौफ़ीक़ मिलती रही।

यू.के शिफ़्ट होने पर हज़रत ख़लीफ़-तुल-मसीह अल् राबा के ज़माने में भी ख़ुत् बात जुमा की ट्रांसलेशन और खुलासे बनाने की ख़िदमत बख़ूबी सरअंजाम देते रहे। क़ुरआन-ए-करीम से मुहब्बत थी। बाक़ायदगी से क़ुरआन-ए-करीम ग़ौर-ओ--तदब्बुर से पढ़ते। अपने बच्चों को भी अनुवाद सिखाया। छोटी उम्र में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुबारक दौर में उनको लंबा अरसा कादियान में जा कर समय गुज़ारने का अवसर मिलता रहा। बहुत सारी तक़रीरें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बानी याद थीं। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब के कुछ हवाले बड़े याद थे, नज़्में याद थीं।

मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा एक बेटा और छः बेटियां हैं। उनके दामाद डाक्टर मुसल्लम अल् दरूबी साहिब हैं। वह कहते हैं कि नमाज़ तह-ज्जुद के पाबंद थे। एक मासूम और मोमिन इन्सान थे। मुत्तक़ी शुजाअ और बहादुर इन्सान थे। ख़िलाफ़त और जमाअत से ग़ैरमामूली मुहब्बत रखते थे। मैंने उनसे खलिफ़ा की मुहब्बत जैसी क़ीमती चीज़ सीखी है। मरहूम को तब्लीग़ का भी बहुत शौक़ था उसके लिए वे कोई मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते थे। मुसल्लम साहिब कहते

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 7 December 2023 Issue No. 49

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हैं कि जब मैं सीरिया और अरदन में था और मरहूम जब भी मेरे पास तशरीफ़ लाते तो मैं देखता कि बहुत जल्द मेरे हमसाइयों के बहुत अच्छे दोस्त बन जाते नीज़ मेरे गारडज़ या मुलाज़मीन इत्यादि से बहुत अच्छा ताल्लुक़ बना लेते, उनको अहमदियत के बारे में बताते रहते।

उनकी पत्नी ज़ुबेदा साहिबा कहती हैं कि ख़िलाफ़त-ए-साल्सा के दौर में नुसरत जहां स्कीम के तहत उनको मग़रिबी अफ़्रीक़ा जाने का हुक्म हुआ तो कामिल इताअत के साथ फ़ौरी तौर पर तैयार हो गए। कहती हैं इतनी जल्दी तैयार हुए कि मुझे भी इस की बड़ी हैरत हुई। कहती हैं हमारी पुत्री दो माह की थी लेकिन आपने कहा कि इमाम का हुक्म है फ़ौरी तैयारी की जाए इसलिए हम चारों बच्चों के साथ रब्वाह पहुंचे। हुज़ूर रहमहुल्लाह से मुलाक़ात हुई, हिदायात हासिल कीं और वापस बन्नूं आकर छुट्टी की दरख़ास्त दी और दुआएं भी मांगनी शुरू कर दीं क्योंकि उस समय हुकूमत की तरफ़ से डाक्टरों के बाहर जाने पर पाबंदियां थीं और वह भुट्टो साहिब का दौर था। लेकिन बहरहाल उनको इजाज़त मिल गई और यह चले गए।

बाजमाअत नमाज़ों के क़ियाम के लिए जितनी भी मुश्किलात पेश आएं हमेशा दुआ करते थे कि किसी तरह ये हल हो जाएं और फिर उनको अल्लाह तआला हल करवा देता था और उनको बाजमाअत नमाज़ों की तौफ़ीक़ मिलती रही। कहती हैं जब अल्लाह तआला ने हमें गाड़ी की तौफ़ीक़ दी तो आते-जाते अपने दोस्तों को भी मस्जिद में ले आते और ले के जाते और इस बात पर बड़े ख़ुश होते। मस्जिद फ़ज़ल के क़रीब घर मिला तो इस बात पर ख़ुशी थी कि आप पाँच नमाज़ें मस्जिद जा कर अदा करेंगे। ख़िदमत-ए-दीन का प्रत्येक ज़रीया और प्रत्येक तरीक़ा इस्तिमाल करते। तब्लीग़ का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देते। चंदों की अदायगी बरवक़्त करते और इसी की तलक़ीन हम सबको करते रहते। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

एक जनाज़ा ग़ायब भी है जो श्रीमती वसीमा बेगम साहिबा पत्नी डाक्टर शफ़ीक़ सहगल साहिब का है। शफ़ीक़ सहगल साहिब साबिक़ अमीर जमात ज़िला मुल्तान रहे हैं फिर नायब वकील अल् तसनीफ़ भी रहे हैं। उनकी उनानवे (89) वर्ष की उम्र में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूमा मूसिया थीं। शौहर के इलावा पीछे रहहने वालों में तीन बेटे हैं। उनके शौहर डाक्टर मुहम्मद शफ़ीक़ सहगल साहिब लिखते हैं कि ख़ाकसार की पत्नी हज़रत-ए-शैख़ मुश्ताक़ हुसैन साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम की पोती और जस्टिस शेख़ बशीर अहमद साहिब मरहूम लाहौर की पुत्री और सय्यदा उम्मे वसीम साहिबा की भांजी थीं। ख़िलाफ़त से प्रत्येक दौर में उनका गहरा ताल्लुक़ रहा और बहुत वफ़ा के साथ प्रत्येक दौर में ख़िलाफ़त के साथ वाबस्ता रहीं।

उनके पोते मुहीउद्दीन साहिब कहते हैं मेरी दादी में क़ुर्बानी का ख़ास माद्दा था। रुहानी ख़ज़ायन का बहुत मुताला करतीं। कहते हैं कि मेरे दादा चूँकि वक़्फ़ ज़िंदगी हैं तो एक-बार मैंने पूछा कि क्या आप भी वक़्फ़ हैं? तो इस पर जवाब दिया कि ख़लिफ़ा यही कहते हैं कि वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी की बीवियां भी वक़्फ़ होती हैं।

आईशा उनकी बहू और भतीजी भी है। वह कहती हैं कि मेरी फूफी एक हरदिलअज़ीज़ शख़्सियत की मालिक थीं। लजना में जो अह्द दुहराया जाता है कि मैं अपनी जान, माल, समय और औलाद को क़ुर्बान करने के लिए तैयार रहूंगी वह उस की अमली मिसाल थीं।कहती हैं मेरी शादी के बाद उन्होंने बहुत सारे तर्बीयती उमूर में मेरी राहनुमाई की। मुझे क़ुरआन-ए-करीम का लफ़्ज़ी अनुवाद भी सिखाया।

फिर ज़किया उनकी भांजी हैं और बहू भी। कहती हैं मेरी ख़ाला ग़रीबपर्वर और मिसाली ख़ातून थीं हर एक से मुहब्बत करने वाली। ख़ावंद की कभी कोई बात रद्द नहीं की। ऐसी लोगों के लिए लाभदायक व्यक्तित्व थीं जो लोगों के काम आने के लिए हर वक़त तैयार रहता है। नईमा जमील साहिबा उनकी हमशीरा हैं वह कहती हैं मेरी माँ की तरह शफ़ीक़ थीं। मैं पच्चास वर्ष की उम्र में बेवा हो गई तो उन को अल्लाह तआला ने मेरे लिए फ़रिश्ता बना दिया। हमेशा प्रत्येक तरह से मेरी मदद की और राहनुमाई की। फिर कहती हैं कि इबादतगु-ज़ार तो थीं हुक़ूकुल् -'इबाद (मनुष्यों के आपसी अधिकार) में भी कई बच्चियों की शादी की ज़िम्मेदारी उठाई। किसी ग़रीब देहाती को भी अपने से कम तर नहीं समझा। मुहताज मुलाज़मीन की माली मुआवनत की भरपूर कोशिश करती थीं।

अल्लाह तआला उनसे भी मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad